Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 7.671
January to March 2024, E-Journal, Vol. I, Issue XLV

दक्षिणी राजस्थान के अपवाह तंत्र का परिचयात्मक अध्ययन

हरिओम सिंह झाला*

* व्याख्याता, जे.आर.शर्मा.पी.जी.कॉलेज, फलासिया (राज.) भारत

प्रस्तावना – प्रस्तुत शोध पत्र में अध्ययन क्षेत्र का चयन मुख्यत: मेवाड़ सन्दर्भ में ही किया गया हैं अर्थात् राजस्थान के दक्षिणी भाग में स्थित उदयपुर,चित्तौड़गढ़,राजसमन्द,भीलवाड़ा आदि जिलों की नदियों या अपवाह प्रणाली पर प्रकाश डालने का प्रयास किया जायेगा।

बनास – मेवाड़ में बहने वाली प्रमुख नदियों में बनास का नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। इस नदी के नाम का शाब्दिक अर्थ वनआशा अर्थात् वन की आशा और 'वर्णनाश या वंशनाश' के रूप में लिया जा सकता है। इसी नदी का निकास अरावली पहाड़ों में कुंभलगढ़ से दक्षिण–पश्चिम में 10 किमी. की दूरी पर 25°7' उत्तरांश में है तथा यह प्रथमत: 48 किमी तक दक्षिण पश्चिम की तरफ जर्गा की श्रेणी के समानान्तर रेखा पर बहती है। इसके पश्चात् यह एक बार पूर्व में मुड़कर पहाड़ के दक्षिण किनारे की तरफ घूमकर 8–9 किमी. पीछे पहाडी श्रेणी में होकर बहती है। करीब 32 किमी. तक इस पहाडी क्षेत्र में बहने के पश्चात् यह खुले मैदान में आ जाती है। इस प्रकार यह नदी कुम्भलगढ़ से मेवाड़ के पठार अर्थात् गोगुन्दा के पठार तक दक्षिण की ओर बहती है, फिर अरावली पर्वत श्रेणियों को काटकर समकोण पर बहने लग जाती है और नाथद्धारा, राजसमन्द, कुरज, पहुना, हमीरगढ होती हुई भीलवाड़ा जिले के बिगोद व मांडलगढ़ के बीच बनास का बेड़च और मैनाली नदियों के साथ संगम होकर त्रिवेणी कहलाती है। 290 किमी. बहने के पश्चात् बनास नदी देवली के पास मेवाड़ राज्य को छोड़कर रामेश्वर के स्थान पर सवाई माधोपुर व कोटा की सीमा के पास चम्बल में मिल जाती है। इसकी मुख्य सहायक नदियों में बेडच कोठारी, खारी, मैनाली विशेष उल्लेखनीय है। सब नदियां सीधी बहे उल्टी बहे बनास, अर्थात् बनास नदी पश्चिम से पूर्व की ओर बहती है। इसकी घाटी के दोनों और उपजाऊ क्षेत्र है। यह नदी गर्मियों में प्राय: सूख जाती है किन्तु कई स्थानों पर खड्डों में पानी भरा रहता है। इस नदी में प्राय: चट्टान व बालू होने से पानी सतह के नीचे बहुत समय तक बहता है जो नदी के दोनों तरफ किनारों के कुओं में जाता है। नदी का उपरी भाग पहाड़ी होने के कारण अच्छी वर्षा प्राप्त करते हैं।'[1] राजस्थान डिस्ट्रीक्ट गजेटियर, उदयपुर (1979) के अनुसार 'It flows through Rajsamand and Railmagratahsils...its total length in Udaipur district is about 243 km. It leaves the district near village Gilund (Railmagratahsil). Important villages on its banks in the district are khamnor, Kotharia, Kuraj, Nathdwara etc. Banas is not perennial but in the districts its bed is hard and rocky and water is long retained. The land lying on the banks is very fertile....'[2]

बेड़च – यह नदी गोगून्दा की पहाड़ियों से निकलती है। इसका जल आवक क्षेत्र 292.30 वर्ग किमी. है। निकास से 18.5 कि.मी. मदार गांव से बहने के पश्चात् यह थूर गांव में आती है और यहां से बड़गांव, बेदला, आहाड़ के पास होते हुए 16 कि.मी. पूर्वी दक्षिणी दिशा में बहती हुई उदयसागर में मिलने से पूर्व आहाड़ की नदी कहलाती है। 75.5 कि.मी. की दूरी तय करके यह नदी उदयसागर में मिलने के पश्चात् उदयसागर का नाला कहलाता है। इसके पश्चात् इसे बेड़च नाम से अभिहित किया जाता है। यहां से चित्तौड़ तक इसकी प्रवाह दिशा उत्तर–पूं. रहती है और 190 किमी. बहने के बाद बीगोद के पास बनास में मिल जाती है। इसकी सहायक नदियों में सबसे पहले बड़ा नाला (गुमानिया वाला) उदयपुर में अलीपुरा के पास मिलता है तथा वांगली, वांगन, औराई आदि सभी सहायक नदियों इसमें दाहिनी ओर से मिलती है।'[3]

राजस्थान डिस्ट्रीक्ट गजेटियर, उदयपुर (1979) के अनुसार .....as Udaipur-Ka- Nala, when it reaches the opon country it is recognised as Berach and after flowing for about 93 km. in the north-easterly direction in the district it leaves its boundary near Akola village (Vallabhnagartahsil) and flows through Chittaurgarh and Bhilwara districts.....the important villages/towns situated on its banks in the district are Ahar, udaipur, Ayad, Vallabhnagar, Badgaon, Khempura, Akola and Gondri..... The chief tributaries of berach are the wangli, the Wagan, the Gomti and the Orai, all joining it on right side. The river retains water in its bed throughout the year in good rainfall and is liable to be flooded in the event of excessive rainfall. Some medium and minor irrigation projects such as Bagolia, Khartana (1968&75) and Vallabhnagar were constructued in its basin a few years back....."[4]

खारी – यह मेवाड़ की नदियों में सबसे उत्तर में है। उदयपुर जिले के सुदूर उत्तरी भाग में स्थित बिजराल गांव (वर्तमान राजसमंद जिला) के पास की पहाड़ियों से निकलकर राजसमन्द, देवगढ़ के पास से होती हुई अजमेर जिले एवं टॉक जिले में देवली के समीप बनास नदी (बनास एवं डाई से मिलकर त्रिवेणी संगम) से मिल जाती है। यह नदी अधिक लम्बी नहीं है। इसकी कुल लम्बाई 80 कि.मी. है। यह नदी उत्तर की ओर मेवाड़ राज्य को प्राकृतिक सीमा प्रदान करती है। इसके निकट खजूरी हुरड़ा, गुलाबपुरा आदि गांव स्थित हैं।[5]

वाकल – यह गोगुंदा के पश्चिम की पहाड़ियों से गोरा नामक गांव के निकट से निकलती है और करीब 80 किमी. दक्षिण में ओगणा और मानपुर के

निकट बहती हुई उत्तर–पश्चिम में मुड़कर कोटड़ा की छावनी के पास पहुंचती है। वहां से 8 किमी. तक पश्चिम की ओर बहती हुई, ईडर राज्य में साबरमती में मिल जाती है। इसकी सहायक मानसी (उदयपुर जिले में बहने वाली नदी) ओगणा के पास इसमें मिल जाती है।[6] इस नदी में पर्याप्त पानी रहा है। राजस्थान डिस्ट्रीक्ट गजेटियर, उदयपुर (1979) के अनुसार ' ... It rises in the hills near Ghora village in Gogundatahsil and flowing past Oghna and Manpur it reaches Kotra and turns towards the west. After flowing for about 112 km. in the district, it leaves the boundary near village GauPipli and enters Gujarat State. Raghogarh, Oghna, Panrawa and Kotra are the important villages situated on its banks.."[7]

सोम – यह नदी ऋषभदेव के पास बाबलवाड़ा के जंगलों में स्थित बीचाबेरा के निकट उदयपुर के नैऋत्य की पहाड़ियों (मेवाड़ के दक्षिण–पश्चिम भाग) से निकलती है तथा जयसमुद्र के निकास का पानी सोम नदी में जाता है जो वहां पश्चिम से पूर्व की ओर बहती है, फिर वह दक्षिण की ओर बबरानां (भबराना) गांव के पास मुड़कर माही नदी में मिल जाती है। इसकी सहायक नदियां जाखम, गोमती और सारनी हैं।[8] राजस्थान डिस्ट्रीक्ट गजेटियर, उदयपुर (1979) के अनुसार '.....rising in the hills near som village in Kotratahsil of the district, the river flows through hilly tracts in south-easterly direction and joins the Mahi near village Baneshwar. Its total length in the district is about 138 km. The important villages situated on its banks are Lauhariya, Limboda, Bhabrana, Aspur, Kandla, Deopura and Jawas. It leaves the district near village Debta (Salumbartahsil). It is a perennial river and its chief tributaries are the Gomti and the Jakham.....'[9]

जाखम – जाखम नदी प्रतापगढ़ के छोटी सादड़ी में अवस्थित भंवरमाता की पहाड़ियों से निकलती है। वहां से धरियावाद में प्रवाहित होती हुई प्रतापगढ़ जिले से निकलकर आसपुरा तहसील डूंगरपुर में प्रवेश करती है और वहां के नोरावल बिलूरा गांव में सोम नदी में विलीनहो जाती है। इस नदी पर जाखनिया के समीप राजस्थान का सबसे ऊँचा (81 मी.) का जाखम बांध निर्मित है। यह नदी पहाडों में सबसे तीव्र गति से बहने वाली नदी है।[10]

जाखम नदी के संदर्भ में भी ज्ञातव्य होता है कि राजस्थान डिस्ट्रीक्ट गजेटियर, उदयपुर (1979) के अनुसार '....has its origin in the hills sout-west of Chhoti Sadri in Chitaurgarh district. The river enters the Udaipur district near village Naglia and after flowing for about 34 km. through the hilly tracts, joins the som near village DeolaKalan in Lasadiatahsil. It flows for about 109 km. in the district and important villages situated on its banks are Deola, Nima-ka-Khera, Dhariyawad, Karmal and Manpura. Sukli and Karmai are its chief tributaries. The river is prone to floods due to steep slope of its bed....'[11]

उपरोक्त प्रमुख नदियों के अलावा मेवाड़ में कई छोटी नदियां अथवा बड़े नाले जिन्हें लोक भाषा में बाला या वाला कहते हैं, बरसाती जल लेकर प्रमुख नदियों में मिलकर उनके जल प्रवाह को तीव्रता प्रदान करते रहे हैं जैसे साई नदी अरावली के पश्चिम से निकलकर 80 किमी. उदयपुर में बहने के पश्चात् गुजरात में जाकर साबरमती के साथ मिल जाती है। इसी भांति आबू एवं उदयपुर के मध्य अरावली पहाड़ियों से साबरमती निकल कर उदयपुर जिले में कोई 44 किमी. बहने के पश्चात् कोटड़ा गांव के पास वाकल में मिल जाती है।[12] राजस्थान डिस्ट्रीक्ट गजेटियर, उदयपुर (1979) के अनुसार ' ...Sabarmati river originates from the western slopes of the Aravalli ranges between Udaipur and Abu. It flows for about 44 km. in the district and leaves its boundary near village Kotra and enters Gujarat State. Its chief tributary in Udaipur district is the Wakal which joins it near village Kotra. Seiriver, orginates from the western slopes of the Aravalli range and flows for nearly 80 km. through Udaipur district before it joins the Sabarmati in Gujarat state near village Dother. In rainy season there is no approach to the tracts through which the river flows. The river is prone to floods during good rainfall.....'[13]

सरनी नदी के किनारे सलूम्बर बसा हुआ है। इस नदी का प्रारम्भ पहाड़ी नाले कदमाल व बेडावच के आकर मिलने से होता है। इन नालों को बूढ़ी नदी (कदमाल का नाला) व लोडावारी नदी कहा जाता है। सलूम्बर के सेलिंग तालाब में गोमती नदी से निकला हुआ खेराड़ का नाला आकर गिरता है जिसे 'भई का नाला' भी कहते हैं। सेलिंगतालाब से निकला नाला सरनी नदी में मिल जाता है और सरनी सोम नदी में मिल जाती है। सलूम्बर की ओर बहने वाली गोमती नदी व झामरी नदी बरसाती बड़ी नदियां हैं।[14]

जयसमुद्र प्रशस्ति केवल गोमती नदी के बारे में बतलाती है कि दो पहाड़ियों के बीच इस नदी को जयसमुद्र में बांधा गया है। जबकि इतिहासकार गौरीशंकर हीराचन्द ओझा ने गोमती, झामरी, रुपारेल और बगारी नामक चार छोटी नदियों को बांधना लिखा है। मेवाड़ में एक कहावत प्रचलित है कि 'नौ नदियां और निन्यानवे बाले' जयसमंद में गिरते हैं। अत: स्पष्ट है कि गोमती, झामरी, चीरोली, रूपारेल और बगार जयसमुद्र को जलापूरित करने वाली नदिया है तो गोमती, ताल व केलवा नदी के साथ साथ कई छोटे मोटे नाले राजसमुद्र को भरने वाले रहे है।[15]

फुलवारी की नाल का पहाड़ी क्षेत्र कई नदी व नालों का उद्गम स्थल भी है। मांसी (मानसी) वाकल, सोम व वाकल नदियां जिन पर सोमकादगर बांध व गुजरात में दारोई बांध बनाया गया है भी यहीं से निकलती हैं। इसके अलावा अभ्यारण्य के उमरिया ब्लॉक में सिंचाई विभाग ने महदी बांध का निर्माण किया है। अभ्यारण्य में कुछ नाले भी बहते हैं जिनमें देव नाला, भीमतलाई, चूना का पानी, भागीबेन, लंगोटिया, रीछीदरा, देवका पानी आदि प्रमुख हैं।[16] इस प्रकार दक्षिणी राजस्थान का अपवाह तंत्र विशालता और विविधता लिए हुए हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:–

1. कविराजा श्यामलदास, वीर विनोद, भाग–1, पृ. 110, महाराणा मेवाड़ हिस्टोरिकल पब्लिकेशन ट्रस्ट,सिटी पेलेस,उदयपुर एवं राजस्थानी ग्रंथागार,जोधपुर,2015 ; ओझा गौरीशंकर हीराचंद, उदयपुर राज्य का इतिहास भाग– पृ. 4 राजस्थानी ग्रंथागार,जोधपुर,2015 ; ओझा प्रियदर्शी, पश्चिमी भारत में जल प्रबंधन, पृ. 57 ; भट्टाचार्य ए. एन हुयुमन ज्योग्राफी ऑफ मेवाड, पृ.13.
2. अग्रवाल, बी.डी., राजस्थान डिस्ट्रिक्ट गजेटियर्स, उदयपुर (भारत का गजेटियर राजस्थान। उदयपुर), पृ.8
3. राणावत ईश्वर सिंह, राजस्थान के जल संसाधन, पृ.23–24
4. Agarawal, B.D., Rajasthan District Gazetteers, Udaipur (Gazetteer of India Rajasthan, Udaipur), P. 8, Govern-

ment of Rajasthan,Jaipur,1979
5. कविराजा श्यामलदास, वीर-विनोद, भाग-1, पृ.111 ; दीपा कँवर राणावत,हेमेन्द्र सिंह सारंगदेवोत, उदयपुर एवं जोधपुर जिलों में मानव संसाधन विकास और भौगोलिक पक्ष(20वीं-21वीं शताब्दी के संदर्भ में)पृ.61,मेवाड़श्री प्रकाशन,चित्तौड़गढ़ एवं नई दिल्ली,2022 ;राजस्थान पत्रिका, अक्टूबर 12. 1990 ई. पृ.4 पर अशोक माहेश्वरी ने इस नदी का उद्गम स्थल राजसमंद जिले की भीम तहसील का भीमाखेड़ा बताया है,
6. ओझा गौरीशंकर हीराचंद, उदयपुर राज्य का इतिहास भाग-1,पृ. 4
7. अग्रवाल, बी.डी., राजस्थान डिस्ट्रिक्ट गजेटियर्स, उदयपुर (भारत का गजेटियर राजस्थान। उदयपुर), पृ.9
8. ओझा गौरीशंकर हीराचंद, उदयपुर राज्य का इतिहास भाग-1,पृ. 4
9. अग्रवाल, बी.डी., राजस्थान डिस्ट्रिक्ट गजेटियर्स, उदयपुर (भारत का गजेटियर राजस्थान। उदयपुर), पृ.9-10
10. दीपा कँवर राणावत,हेमेन्द्र सिंह सारंगदेवोत, उदयपुर एवं जोधपुर जिलों में मानव संसाधन विकास और भौगोलिक पक्ष(20वीं-21वीं शताब्दी के संदर्भ में),पृ.62-63
11. अग्रवाल, बी.डी., राजस्थान डिस्ट्रिक्ट गजेटियर्स, उदयपुर (भारत का गजेटियर राजस्थान। उदयपुर), पृ.10
12. राणावत ईश्वर सिंह, राजस्थान के जल संसाधन, पृ.29
13. अग्रवाल, बी.डी., राजस्थान डिस्ट्रिक्ट गजेटियर्स, उदयपुर (भारत का गजेटियर राजस्थान। उदयपुर), पृ.10
14. भंडारी विमला,सलुम्बर का इतिहास,पृ.5-6, अनुपम प्रकाशन, सलुम्बर, 2000
15. ओझा प्रियदर्शी, पश्चिमी भारत में जल प्रबंधन, पृ. 113,116,121
16. गुप्ता मोहन लाल, राजस्थान में वन एवं वन्य जीवन,पृ.199-200

****